



बदलेगा समाज जब उठाओगे आवाज

हरीश कुमार

समय दे रहा आवाज
बदलेगा नहीं बदलना होगा समाज
नारी तुम अबला नहीं
तुम तो सबला हो
पहचानो खुद को
ढूँढो अपनों वजूद को
तुम निराधार नहीं
तुम तो आधार हो
इस मानव समाज का
तुम स्नेह की मूर्ति
पहचनो अपनी शक्ति
हो रहा खंडहर
ये मानव समाज
होगा सुधार
जब उठाओगे आवाज
समय दे रहा आवाज
बदलेगा नहीं बदलना होगा समाज